साहित्यसुधा
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यकारों की रचना स्थली
वर्ष: 3, अंक 50, दिसम्बर(प्रथम) , 2018

एक दिसंबर एड्स दिवस पर खास:
एड्स : बचकर रहें लाल फंदे से !

घनश्याम बादल

दुनिया भर में इंसान का यदि सबसे घातक दुश्मन है लाइलाज एड्स का रोग । अब कैंसर तक के रोगी काफी बड़ी संख्या में ठीक हो रहें हैं पर एड्स ने जिस पर हमला बोल दिया उसकी मृत्यु करीब - करीब तय ही मानी जाती है । हालांकि एड्स के वायरस का पता 1983 में चल गया था , पर उपचार व उसकी काट की खोज भी जारी है । आज एड्स डे पर इसी पर प्रकाश डालता है घनश्याम बादल का यह लेख ।

क्या एड्स और एच.आई.वी एक हैं ?

नहीं, एच.आई.वी एक अतिसूक्ष्म विषाणु हैं जिसकी वजह से एड्स हो सकता है। एड्स स्वयं में कोई रोग नहीं है बल्कि एक उपलक्ष्ण है। यह अन्य रोगों से लड़ने की प्रतिरोधक क्षमता को घटा देता है। प्रतिरोधक क्षमता के घटने से कोई भी संक्रमण, जैसे आम सर्दी जुकाम से ले कर टीबी,, कैंसर जैसे रोग तक सहजता से हो जाते हैं और मरीज की मृत्यु भी हो सकती है। अतः एड्स परीक्षण महत्वपूर्ण है। उचित परीक्षण से ही एड्स के संक्रमण का पता लगाया जा सकता है।

क्या हैं एड्स के शुरुआती लक्षण ?

तेजी से अत्याधिक वजन घटन , सूखी खांसी , लगातार ज्वर या रात के समय अत्यधिकध्असाधारण मात्रा में पसीने छूटना ,कंधों और गर्दन में लम्बे समय तक सूजी हुई लसिकायें ,एक हफ्ते से अधिक समय तक दस्त होना। लम्बे समय तक गंभीर हैजा, फेफड़ों में जलन ,चमड़ी के नीचे, मुँह, पलकों के नीचे या नाक में लाल, भूरे, गुलाबी या बैंगनी रंग के धब्बे, निरंतर भुलक्कड़पन, लम्बे समय तक उदासी और अन्य मानसिक रोगों के लक्षण।

तीन हैं प्रमुख चरण:

एचआईवी संक्रमण के तीन मुख्य चरण हैं - तीव्र संक्रमण, रोग निदान में विलंब करना एवं एड्स से पीड़ित होना हैं।

तीव्र संक्रमण:

एचआईवी की प्रारंभिक अवधि 2 से 4 सप्ताह है इसमें इन्फ्लूएंजा जैसी बीमारी या मोनोंयुक्लिओसिस जैसी बीमारी के लक्षण दिखते हैं सबसे प्रमुख लक्षण बुखार, लिम्फ नोड्स, गले की सूजन, चक्कते, सिर दर्द या मुँह और जननांगों के घाव आदि है। कुछ लोगों में उल्टी, मिचली या दस्त और कुछ में जुल्लैन बर्रे सिंड्रोम जैसी बीमारियों के लक्षण दिखते हैं। लक्षण की अवधि आम तौर पर एक या दो सप्ताह होती है ।

निदान में देरी:

उपचार के बिना एचआईवी संक्रमण का दूसरा चरण ३ साल से २० साल तक रह सकता है । इस चरण के अंत के कई लोगों को बुखार, वजन घटना,

गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल समस्याएं और मांसपेशियों में दर्द अनुभव होता है । इलाज के आभाव में बढ़ कर एड्स में बदल जाता है ।

पूरी दुनिया है त्रस्त:

दुनिया भर में इस समय लगभग चार करोड़ 20 लाख लोग एच.आई.वी का शिकार हैं। इनमें से दो तिहाई सहारा से लगे अफ्रीकी देशों में रहते हैं और उस क्षेत्र में भी जिन देशों में इसका संक्रमण सबसे ज्यादा है वहाँ हर तीन में से एक वयस्क इसका शिकार है। दुनिया भर में लगभग 14,000 लोग प्रतिदिन इसका शिकार हो रहे हैं ।

ये हैं एच. आई. वी. संक्रमण के खास कारक:

असुरक्षित सैक्स:

एचआईवी संक्रमण सबसे ज्यादा विधा संक्रमित व्यक्ति के साथ यौन संपर्क से होता है. दुनिया भर में एच. आई. वी. प्रसार सबसे अधिक असुरक्षित यौन संपर्क से हुआ है । हालांकि, एच. आई. वी. प्रसार भिन्न भिन्न देशों में भिन्न भिन्न तरीकों से हुआ है. संयुक्त राज्य अमेरिका में 2009 तक, सबसे अधिक 64ः एच. आई. वी. प्रसार समलैंगिक पुरुषों में हुआ । असुरक्षित विषमलिंगी यौन संबंधो में अनुमानतः प्रत्येक यौन सम्बन्ध में एचआईवी संक्रमण का जोखिम कम आय वाले देशों में उच्च आय वाले देशों कि तुलना से चार से दस गुना ज्यादा है।

रक्त के लेन देन से:

एचआईवी के संक्रमण का दूसरा सबसे बड़ा स्रोत रक्त और रक्त उत्पाद हैं। रक्त के द्वारा संक्रमण नशीली दवाओ के सेवन के दौरान सुइयों के साझा प्रयोग के द्वारा, संक्रमित सुई से चोट लगने पर, दूषित रक्त या रक्त उत्पाद के माध्यम से या उन मेडिकल सुइयों के माध्यम से जो एच. आई. वी. संक्रमित उपकरणों के साथ होते हैं.। दवा के इंजेक्शन आपस में बाँट कर लगाने से भी इसके फैलने का जोखिम होता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुमान के अनुसार चिकित्सा सुइयों के द्वारा व टैटू बनाने या बनवाने, खुरचने से भी संक्रमण का जोखिम बना रहता है लेकिन अभी तक किसी भी ऐसे मामले के पुष्टि नहीं हुई है ।

हो सकता है माँ से बच्चे को :

एचआईवी माँ से बच्चे को गर्भावस्था के दौरान, प्रसव के दौरान और स्तनपान से हो सकता है। एचआईवी दुनिया भर में फैलने का यह तीसरा सबसे आम कारण है । इलाज के अभाव में जन्म के पहले या जन्म के समय इसके संक्रमण का जोखिम 20 प्रतिशत तक होता है और स्तनपान के द्वारा यही जोखिम 35 प्रतिशत तक होता है । वर्ष २००८ तक बच्चो में एचआईवी का संक्रमण 90 प्रतिशत मामलों में माँ के द्वारा हुआ। नवजात शिशु को स्तनपान से न करा के तथा नवजात शिशु को भी एंटीरिट्रोवाइरल औषधियों कि खुराक देकर माँ से बच्चे में एच. आई. वी. का संक्रमण रोका जाता है ।

कैसे बचें एड्स से :

अपने जीवनसाथी के प्रति वफादार रहें। एक से अधिक व्यक्ति से यौनसंबंध ना रखें। यौन संबंध(मैथुन) के समय कंडोम का सदैव प्रयोग करें। यदि कोई एच.आई.वी संक्रमित या एड्स ग्रसित हैं तो अपने जीवनसाथी से इस बात का

खुलासा अवश्य करे। बात छुपाये रखनें तथा इसी स्थिती में यौन संबंध जारी रखनें से साथी भी संक्रमित हो सकता है और संतान पर भी इसका प्रभाव पड़ सकता है।एच.आई.वी संक्रमित या एड्स ग्रसित रक्तदान कभी न करें। रक्त ग्रहण करने से पहले रक्त का एच.आई.वी परीक्षण अवश्य कराएं ।

सुरक्षित हो यौन संपर्क:

यौन संपर्क के दौरान कंडोम का लगातार इस्तेमाल एचआईवी संक्रमण के जोखिम को लगभग 80 प्रतिशत तक कम कर देता है । जब एक साथी एचआईवी से संक्रमित है तब कंडोम का लगातार इस्तेमाल करने से असंक्रमित व्यक्ति को एचआईवी संक्रमण होने कि संभावना प्रति वर्ष 1 प्रतिशत से कम हो जाती है । महलाओं का कंडोम इस्तेमाल करना भी पुरूषों के कंडोम इस्तेमाल करने के सामान सुरक्षा प्रदान करता है, वर्ष 2007 में विश्व स्वास्थ्य संगठन और यू.एन.एड्स ने महिला से पुरुष में एचआईवी संक्रमण से बचने का उपाय पुरुष खतना बताया था । यद्यापि इससे पुरुष से महिला में संक्रमण को रोका जा सकता है यह विवादस्पद है ।

कुछ विशेषज्ञों को डर है कि खतना पुरुषों के बीच यौन जोखिम को बढ़ावा दे सकती है जो कि अपने निवारक प्रभाव को कम कर देती है , जिन महिलाओं का मादा जननांग कट चुका होता है उनमें एचआईवी की वृद्धि का जोखिम बढ़ जाता है ।

एड्स: मिथक और सच :

एच.आई.वी संक्रमित या एड्स ग्रसित व्यक्ति से हाथ मिलाने से ,एच.आई.वी संक्रमित या एड्स ग्रसित व्यक्ति के साथ रहने से या उनके साथ खाना खाने

से, एक ही बर्तन या रसोई में स्वस्थ और एच.आई.वी संक्रमित या एड्स ग्रसित व्यक्ति के खाना बनाने से।

एड्स, क्या है उपचार ?

आज भी एड्स लाइलाज है । हालांकि एड्स के इलाज पर निरंतर शोध जारी है । भारत, जापान, अमरीका, युरोपीय देश और अन्य देशों में इस के इलाज व इससे बचने के टीकों की खोज जारी है। हालांकी एड्स के मरीजों को इससे लड़ने और एड्स होने के बावजूद कुछ समय तक साधारण जीवन जीने में सक्षम हैं परंतु अंत में मौत निश्चित है। इलाज या रोकथाम की दवाईयाँ महँगी हैं, प्रति व्यक्ति सालाना खर्च तकरीबन 1500000 रुपये होता है, और ये हर जगह आसानी से भी नहीं मिलती। इनके सेवन से बीमारी थम जाती है पर समाप्त नहीं होती। अगर इन दवाओं को लेना रोक दिया जाये तो बीमारी फिर से बढ़ जाती है, इसलिए एक बार बीमारी होने के बाद इन्हें जीवन भर लेना पड़ता है।

अच्छी खबर:

अच्छी खबर यह है कि सिपला और हेटेरो जैसे प्रमुख भारतीय दवा निर्माता एच.आई.वी पीड़ितों के लिये शीघ्र ही गोलियाँ बनाने जा रहे हैं जो इलाज आसान बना सकेगा (सिपला की वाईराडे द्ध इसे सरकार से भी मंजूरी मिल गई है। इन दवाईयों पर प्रति व्यक्ति सालाना खर्च तकरीबन 1 लाख रुपये होगा, यानि यें वैश्विक कीमत से यह 80-85 प्रतिशत सस्ती होंगी।

बदलें एड्स रोगियों के प्रति व्यवहार:

एड्स रोगी को समाज संदेह और भय की नजर से देखता है। यौन विषयों पर बात करना हमारे समाज में वर्जना का विषय रहा है। जबकि इस संवेदनशील

मसले पर अनजान बने रहना कोई हल नहीं है। इस भयावह स्थिति से निपटने का एक महत्वपूर्ण पक्ष सामाजिक बदलाव लाना है उनसे नफरत न करें इसे भी एक रोग की तरह ही मान कर उनका ख्याल रखें व हौसला बढ़ाएं ।

भारत में एड्स :

ब्रिटिश मेडिकल जर्नल में हाल के एक अध्ययन के अनुसार, भारत में लगभग 14-16 लाख लोग एचआईवी से प्रभावित है , २००५ में अनुमान लगाया था कि भारत में लगभग 55 लाख लोग एचआईवी एड्स से संक्रमित हो सकते हैं 2007 में एड्स से प्रभावित लोगों कि संख्या को 25 लाख के आस-पास मानी गई संयुक्त राष्ट्र की मगर 2011 के एड्स रिपोर्ट के अनुसार, पिछले 10 वर्षों भारत में नए एचआईवी संक्रमणों की संख्या में गिरावट आई है ।भारत में एड्स रोगियों बढ़ती संख्या की वजह आम जनता को एड्स के विषय में सही जानकारी न होनाएड्स तथा यौन रोगों के विषयों को कलंकित समझा जाना शिक्षा में यौन शिक्षण व जागरूकता बढ़ाने वाले पाठ्यक्रम का अभाव कई धार्मिक संगठनों का गर्भ निरोधक् के प्रयोग को अनुचित ठहराना आदि मुख्य हैं ।

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें